विज्ञान और संकोची स्वभाव

हाल के अध्ययन से पता चला है कि विज्ञान विषय वे विद्यार्थी लेना पसंद करते हैं जो संकोची स्वभाव के होते हैं। नेदरलैण्ड के ग्रॉनिन्जेन विश्वविद्यालय के हेन्क कॉर्परशूक और उनके साथियों ने अपने अध्ययन के लिए छात्रों के पूरे स्कूली जीवन के आंकड़ों के अलावा छात्रों के व्यक्तित्व सम्बंधी परीक्षणों का भी सहारा लिया।

कॉर्परशूक ने करीब 4000 छात्रों के शैक्षिक आंकड़े लिए और यह देखा कि 15 वर्ष की उम्र में उन्होंने कौन-से विषय का चुनाव किया था। व्यक्तित्व परीक्षणों के साथ इन आंकड़ों का मिलान करने पर पता चला कि जिन छात्रों ने विज्ञान विषय का चुनाव किया था वे कम बहिर्मुखी थे, बनिस्बत उन छात्रों के जिन्होंने विज्ञानेतर विषय लिए थे। विज्ञान छात्रों के अंक भावनात्मक स्थिरता और सदाचारिता के परीक्षणों में ज़्यादा थे।

ये परिणाम निकालते वक्त इस बात का ध्यान रखा गया था कि विषय चुनाव पर प्रभाव डाल सकने वाले अन्य कारकों - जैसे गणितीय कौशल और व्यक्ति का लिंग - वगैरह के प्रभावों को अलग किया जा सके। ऐसा करने के बावजूद निष्कर्ष यही रहा कि ज़्यादा अंतर्मुखी बच्चे विज्ञान चुनते हैं। *जर्नल ऑफ रिसर्च इन पर्सनेलिटी* में प्रकाशित यह अध्ययन अपने किस्म का पहला अध्ययन है। कॉर्परशूक कहती हैं कि यह तो माना ही जाता है कि विज्ञान के छात्र थोड़े गुमसुम होते हैं मगर यह पहली बार देखा गया है कि यह प्रवृत्ति 15 वर्ष की उम्र में ही शुरू हो जाती है।

इस अध्ययन से एक सवाल यह उठा है कि क्या शिक्षकों को अपने छात्रों की प्रवृत्तियों के अनुसार उन्हें अलग-अलग विषयों में धकेलने की कोशिश करनी चाहिए। अधिकांश शिक्षा मनोविज्ञानियों का मत है कि ऐसा करना दुखदायी होगा। किसी अंतर्मुखी छात्र को जबरन भौतिक शास्त्र की ओर धकेलना उचित नहीं होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***